ब्राह्मण कुल भूषणों के पालनीय नियम एवं मर्यादाएं

1. अमृतवेले 03:30 से 04:45 बजे तक सामूहिक रूप से क्लास रूम में बैठकर याद की यात्रा करना आध्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक है।
2. ब्राह्मण कुल भूषण राजयोगी भाई-बहनों को प्रतिदिन संगठित रूप से राजयोग का अभ्यास करना और मुरली सुनना जरूरी है।
3. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, अन्न की शुद्धि, संगदोष से दूर रहने के नियमों का पालन करना अनिवार्य है।
4. पुरुषोत्तम संगमयुग में मन-वचन-कर्म की पवित्रता, दृष्टि-वृत्ति की शुद्धता तथा सम्बन्ध-सम्पर्क में सात्विकता रखना हमारी शान है।
5. परमात्म-स्मृति में बना हुआ शुद्ध शाकाहारी भोजन शिवबाबा की याद में ही स्वीकार करना है।
6. सर्व प्रकार के नशीले पदार्थ आध्यात्मिक जीवन का नाश करते हैं इसलिए इनसे सदा दूर रहना है।
7. सदा योगयुक्त ज्ञानी और सकारात्मक चिंतक आत्माओं का ही संग करना है। अश्लील पुस्तकें अथवा टी.वी. कार्यक्रमों से स्वयं को दूर रखना है।
8. किसी भी आत्मा को मन-वचन-कर्म से न दु:ख देना है और न ही लेना है।
9. सेवाकेन्द्र पर राजनैतिक, व्यापारिक, व्यावसायिक, लौकिक एवं स्थूल पैसे की लेन-देन व धन्धे की बातें नहीं करनी हैं।
10. ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध यदि कोई भूल हो जाए तो बापदादा व निमित्त बनी हुई बड़ी बहनों को पत्र लिखें। इसमें स्वयं का ही कल्याण है।
11. सेवा सम्बन्धित प्रत्येक कार्य निमित्त बहनों की सलाह से करने में ही स्वयं, सर्व तथा संस्था का कल्याण निहित है।
12. किसी भी भाई-बहन को कोई भी पुस्तक/पत्रक/पत्रिका का प्रकाशन निमित्त बहनों की स्वीकृति से ही करना है।
13. ईश्वरीय विश्व विद्यालय से सम्बन्धित कारोबार के सम्बन्ध में सरकार से अपने व्यक्तिगत नाम से लिखा-पढ़ी नहीं करना है।
14. मधुबन तथा ज़ोन इन्चार्ज की स्वीकृति के बिना कोई भी भाई अथवा बहन सेण्टर पर नहीं रह सकता है।

नोट: उपर्युक्त नियम एवं मर्यादाएं ब्राह्मण कुल भूषणों का श्रृंगार हैं। इनका पालन करना संगमयुग के अनमोल समय को पूर्ण रूप से सफल करना है। इनका उल्लंघन करने पर अनुशासनात्मक कार्रवाई सम्भव है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय, आबू पर्वत